Seventeenth Loksabha

an>

Title: Regarding border skirmishes in Jammu and Kashmir.

डॉ. फारूख अब्दुल्ला (श्रीनगर): माननीय स्पीकर साहब, मैं आपका बहुत ही आभारी हूं कि आपने मुझे वक्त दिया। पहले तो मैं अपने सारे साथियों का शुक्रिया अदा करता हूं, जिन्होंने मेरे लिए बात की, जब मैं बंद था। अब मुझे मौका मिला है, एक साल बाद हाउस में आया हूं, मैं आपका भी शुक्रिया करता हूं।

जम्मू-कश्मीर की स्थिति ऐसी है कि जहां हमारी प्रोग्रेस होनी चाहिए थी, वहां कोई भी प्रोग्रेस नहीं है। मैं ईमानदारी के साथ कहता हूं, स्पीकर साहब, आज भी हमारे बच्चों और दुकानदारों के पास 4जी फैसिलिटी नहीं है, जबकि हिंदुस्तान में बाकी जगहों पर है। वे तालीम कैसे कर सकते हैं, जबकि आज सब कुछ इंटरनेट पर है?

मैं साथ-साथ यह भी आपसे कहना चाहता हूं, मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि आज फौज ने मान लिया है कि जो तीन आदमी शोपियां में मारे गए, वे गलती से मारे गए हैं, उनकी इन्वेस्टिगेशन कर रहे हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि सरकार उनके लिए बहुत ज्यादा कम्पेनसेशन देगी।

दूसरी बात है कि बॉर्डर स्कर्मिशिज़ बढ़ रही हैं, लोग मर रहे हैं, इसमें कोई शक नहीं है। आप रोज़ अख़बार में देख लीजिए। इस स्थिति से निकलने का कोई रास्ता निकालना पड़ेगा। मैं नहीं समझता कि बातचीत के सिवा कोई और रास्ता हो सकता है।...(व्यवधान) जैसे आप चीन से बात कर रहे हैं, कोशिश कर रहे हैं कि वह पीछे हट जाए, इसी तरह से हमें अपने पड़ोसी से भी बात करके इस स्थिति से निकलने के लिए रास्ता निकालना पड़ेगा। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: श्री टी.आर बालू जी।

...(व्यवधान)

डॉ. फारूख अब्दुल्ला: जो पढ़ेलिखे हैं, जो इंजीनियर हैं, आज बेकार हैं। इन्होंने अपनी एसोसिएशन काम करने के लिए बनाई, लेकिन आज सरकार ने उसे बंद भी कर दिया है कि आप नहीं कर सकते। बताइए, अगर हिंदुस्तान तरक्की कर रहा है, क्या जम्मू-कश्मीर को जरूरत नहीं है कि वह भी इस मुल्क के साथ तरक्की करे, आगे बढ़े? ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: टी.आर. बालू जी।

...(व्यवधान)

डॉ. फारूख अब्दुल्ला: हम मुसलमान हैं, इसमें कोई शक नहीं है। ...(व्यवधान)